आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:19/03/2023; Accepted:21/03/2023; Reviewed: 21/03/2023; Published:24/03/2023

फीजी में विवाह संस्कार- 'भतवान' की रस्मों का अध्ययन

डॉ. सुभाषिनी लता कुमार[1], श्रीमती सरिता चंद[2]
फीजी नेशनल युनिवर्सिटी, फीजी

डॉ. सुभाषिनी लता कुमार , सरिता चंद, "फीजी में विवाह संस्कार- 'भतवान' की रस्मों का अध्ययन ", आखर हिंदी पत्रिका, खंड3/अंक 2/मार्च 2023, (195-200)

अनुरूपी लेखक: डॉ.सुभाषिनी लता कुमार, हिन्दी प्रवक्ता फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी , फिजी

प्रवासी भारतीय जहाँ-जहाँ गए, वे अपने साथ अपनी भाषा, संस्कृति और अपना साहित्य ले गए। वे जिस देश में रहे वहाँ के परिवेश का प्रभाव उनकी संस्कृति में देखा जा सकता है, इसके बावजूद वे अपनी मूल सांस्कृतिक परंपरा को नहीं भूले। फीजी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. विवेकानन्द शर्मा का कहना है कि हिंदी के रथ पर सवार होकर ही हम अपनी संस्कृति और परंपरा की रक्षा कर सकते हैं। वे अपने भारतीय भाई-बहनों को समझाते हैं कि अपनी पहचान को बचाए रखने का मूलमंत्र अपनी भाषा और संस्कृति का सम्मान है। फीजी, मॉरीशस, ट्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में बसे भारतवंशियों के माध्यम से आज वहाँ हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति संरक्षित है।

संस्कृति का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है। संगीत, कला, धर्म, नैतिकता, आध्यात्मिक तत्व, राजनीतिक लोकरति, साहित्य इत्यादि का इसमें समावेश होता है। फीजी में चाहे यहाँ के मूल निवासी हों अथवा भारतीय मूल के लोग दोनों ही जातियों में रस्मों-रिवाजों की समृद्ध परंपरा है। फीजी के प्रवासी भारतीयों में अनेक संस्कार और उत्सव विधि अनुसार आज भी मनाएं जाते हैं, जिसका संबंध प्राचीन शास्त्रों एवं पुराणों से है। डॉ. इंदू चंद्रा के अनुसार फीजी में शास्त्रानुसार सोलह संस्कारों में से जन्म, विवाह और मृत्यु संबंधी संस्कार प्रचलित हैं।

भारतीय त्योहार और संस्कृति दुनिया भर में मशहूर है और जब बात शादी की हो तो हिन्दू रीति-रिवाजों की अपनी विशेषताएं हैं। इन संस्कारों के साथ आपसी रिश्तें, मोहब्बत एवं मंगल भावनाओं का संगम नजर आता है। भारतीय समाज में विवाह संस्कार एक महत्वपूर्ण और पवित्र हिस्सा है, इससे संबंधित हर एक दिन की रस्में समाज में बहुत मायने रखती हैं। यह आलेख फीजी के लम्बासा शहर में स्थित बातिनिकामा गाँव

में हिन्दू विवाह संस्कार के अंतर्गत भतवान के दौरान निभाई गई रस्मों पर आधारित है। भतवान की परंपरा हमारे गिरमिटिया पूर्वजों के समय से प्रचलित है। आज हमारे कई संस्कारों में बदलाव आए हैं जिसके कारण कई रस्में को निभाने की विधि कुछ बदल गई है। समाज में जो देखा जाता है वहीं किया जाता है और इस देखा-देखी के खेल में समाज में कुछ ऐसे भी परिवार हैं जिन्हें सही मायने में इन संस्कारों की सही विधि एवं विशेषता का आभास नहीं है।

फीजी में विवाह सबसे महत्वपूर्ण संस्कार हैं, क्योंकि यही एक ऐसा संस्कार है जो सभी वर्णों में समान रूप से विशद अनुष्ठान के साथ संपन्न होता है और इसकी विधि की पूर्णता सबको रहती है। हिंदू शादियां रंग, परंपरा और भारतीय संस्कृति की मीठी सुगंध से भरपूर होती हैं। हमारे यहां शादी ब्याह में तीन से चार दिन का आयोजन होता है। जिसमें वर छेकाई, तिलक, तेलवान, द्वारपूजा, भतवान जैसी रश्में होती होती हैं। इस दौरान कई पूजा-पाठ शामिल हैं, ढोल पीटना, हॉर्न बजाना और मंत्रों के जाप के साथ प्रार्थना की जाती है। दूल्हा और दुल्हन शादी के दिन तक अपने-अपने आवास में अलग रहते हैं और प्रत्येक अपनी-अपनी रस्में अपने परिवारवालों के साथ निभाते हैं। प्रत्येक निवास पर मेहमानों के लिए शाकाहरी भोजन, गीत और नृत्य के साथ-साथ 'नंगोना' (फीजी का पेय पदार्थ) का प्रबंध रहता है।

फीजी के कवि नरेश चंद की फीजी हिंदी कविता 'सादी- उत्सव या संस्कार?' में विवाह के दौरान की गई रस्मों का सुन्दर चित्रण मिलता है-

तेल्वान आईस तो बटुर गय पूरा गाँव
पोतिन दूल्हाक तेल कई दफे सर से पांव
सर से पांव आज दूल्हाक· अइसन चमकायिन
कनिकानी वाला चेहरा चटक बनाइन।

लाए-लाए के बिन्जिन बत्ती सब के घर से
जगमग कर दिहिन घर-अंगना पूरा रात से पाहिले
रात के चलिन महिला मंडल फिर धरती पूजे
नाच उनके देखें लड़कन झूखी में छिप के।

भात्त्वान के दिन-दुपरहे पूड़ी सब छन गए
दाल-भात आलू-बईगन तरकारी बन गए
तरकारी बन गए संझक सब कोई सपर के आईन
ढोलक बजाये के मिहला मंडल गाना गाइन।

फिर अदमिन में चला निंगोना तईलेवु वाला
उधर अउरतन गाना गावें और भूजें लावा

भूजें लावा नेग मांगे सब कोई दई जाना
चलो हमहु दई आई उनके दुई-चार आना।

(फीजी का हिंदी साहित्य-एक संचयन, पृ.286)

विवाह संस्कार के अंतर्गत भतवान जो शादी से एक दिन पूर्व की रस्में होती हैं की बड़ी मान्यता है। यह संस्कार फीजी में हमारे पूर्वजों द्वारा गिरमिट के समय भारत से आई है। हमारे पूर्वजों को इन संस्कारों के बारे में ज्यादा ज्ञान था, लेकिन जैसे-जैसे नई पीढ़ी आती गईं तो वैसे-वैसे इन संस्कारों में थोड़ा बहुत बदलाव आता गया जो स्वाभाविक भी है। आज समाज में इसका जो रूप है शायद पहले से भिन्न है। भले ही रस्मों में थोड़ा बहुत बदलाव आया है, मगर आज भी शादी में भतवान की धूम-धाम और खुशी के माहोल को नकारा नहीं जा सकता। अतः समग्र रूप से यही प्रकट होता है कि लोग आज भी शादी में भतवान की रस्मों को निभाते हैं।

प्रस्तुत आलेख में भतवान से जुड़ी महत्वपूर्ण रस्में और उनकी विशेषताएं मौजूद है। विषय से संबंधित जानकारी को पंडित अमर नायडू से साक्षात्कार, इन्टर्नेट साधन, किताबी अध्ययन तथा बातिनिकामा के बड़े-बुजुर्गों से बात-चीत कर हासिल की गई है। वैसे देखा जाए तो अलग-अलग समुदायों में भतवान की रस्में-रिवाज़ अलग होती हैं लेकिन यह शोध विशेषकर बातिनिकामा गाँव में भतवान की रस्मों पर आधारित है।

हिन्दू विवाह के अंतर्गत भतवान को कई रस्में निभाई जाती है तथा इन की अपनी विशेषताएं होती है जो शादी की माहोल को और भी सुन्दर बना देती है। इस दिन की जितनी भी रस्में होती है वो हिन्दू विवाह में बहुत ही अहम भूमिका निभाती है तथा अगले दिन विवाह की तैयारी में सहायक होती हैं। हिंदू विवाह समारोह का उद्देश्य न केवल जोड़े के दिलों को बांधना है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि उनका जीवन आध्यात्मिक स्तर पर भी जुड़ा रहे। बड़े- बुजुर्गों की मान्यता है कि भतवान की रस्में को निभाना जरूरी है ताकि वर्तमान पीढ़ी इन रस्मों के बारे में जाने और भविष्य में ये रस्मों सुरक्षित रहें।

भतवान की रस्में और विशेषताएं

- **मंत्री पूजन**

हिन्दू रीति-रिवाज से होने वाली ब्याह में मंडप सबसे अहम होता है और मंडप में अगर केले का पेड़ लगा दिया जाता है तो माना जाता है कि सब कार्य मंगलकारी सिद्ध होगा। केले के पेड़ को प्राचीन समय से ही पूज्य और पवित्र माना जाता है जिसका पूजा में अनेक तरह उपयोग किया जाता है। केले के पेड़ को शुभ और पवित्रता का प्रतीक माना गया है। यह भी मान्यता है कि केले के वृक्ष में देवगुरू बृहस्पति और साक्षात भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी का वास होता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार केले के पेड़ को मंडप में स्थापित करने से सकारात्मक ऊर्जा रहती है, और विवाह में आने वाली सभी बाधा को दूर करती है तथा नए जीवन में प्रवेश करने वाले वर-वधु पर आशीर्वाद रहता है और उनके वैवाहिक बंधन के साक्षी बनते हैं। भतवान के दिन में सब से पहले मंडप के बीच में गड्ढा खोदा जाता है जिसके बाद केले के पेड़ को परिवार के पुरूष मिलकर पंडित

द्वारा मंत्र पढ़ने पर इसे मंडप में गाड़ देते हैं। इस के बाद जिसका विवाह होने वाला होता है और माता-पिता मिल कर पंडित द्वारा गणेश जी का अवाहन करते हैं।

केले के पेड़ पर हल्दी का गाठ, चने का दाल और शहद अर्पित करते हैं। अक्षत और पुष्प चढ़ाकर फिर इस में लाल धागा बांधा जाता है। ऐसा करना मंगलकारी माना जाता है। सब मिल कर पूजा करते हैं और पंडित होने वाली वर या वधु के कलाई पर रक्षा धागा बांधते हैं ताकि इस शुभ कार्य में कोई बाधा नहीं आए और बिना किसी विघ्न के विवाह पूर्ण हो। इस पूजन के बाद माता-पिता मिलकर हल्दी पिस्ते है जो होने वाले वर-वधु को लगाई जाती है। इस के बाद अंदर घर में जिस जगह पर कोहबर होता है वहाँ पूजन करके हवन किया जाता है और दीप जलाई जाती है *(अमर पंडित नायडू. 2021, "भतवान की रस्म", लम्बासा, संगम मंदिर)*। जितने भी लोगों से इस विषय पर वार्तालाप की गई सभी ने यही बताया और आज भी समाज में पूजा-पाठ, विवाह आदि में वे केले के पेड़ का प्रयोग करते है तथा इसी प्रकार रस्मों को निभाते हैं।

- **सात कन्या भोज**

सात कन्या भोज की रस्म को भतवान के दिन में होने वाले वर या वधु की माता पंडित द्वारा कराती है। सबसे पहले सात कुँवारी कन्या जो दो से दस वर्ष की हो उन्हें मंडप में बिठाया जाता है। यह मान्यता है कि कुँवारी कन्या में माँ शक्ति का निवास होता है। उसके पूजन से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है जो माँ भागवती की आराधना से होती है। सभी कन्या को तिलक लगाई जाती है तथा केले के पत्ते पर साफ सात्विक भोजन परोसा जाता है। कन्याओं को देवियों का स्वरूप मानकर उनकी पूजा की जाती है। मान्यताओं के अनुसार कन्याओं का देवियों की तरह आदर-सत्कार और भोजन कराने से माँ दुर्गा प्रसन्न होती है और सुख-समृद्धि का वरदान देती है।

- **हल्दी की रस्म**

शादी से पहले हल्दी की रस्म का खास महत्व है। हल्दी, चंदन और कुछ सुगंधित तेलों को मिलाकर बनाया जाने वाला ये उबटन हर लड़के और लड़की को शादी से पहले लगाया जाता है। यह एक बहुत खुबसूरत और रंगीन रस्म है। शादी में हल्दी के शगुन को बहुत ही जरूरी माना गया है। ऐसा माना जाता है कि हल्दी दुल्हन और दूल्हे को बुरी नजरों से बचाती है। हल्दी रस्म होने के बाद दुल्हन और दुल्हे को घर से बाहर निकलने की मनाही होती है। हल्दी के पीले रंग का विशेष महत्व है। लोगों का मानना है कि हल्दी होने वाले नए दम्पति के लिए शुभ होती है और उनकी खुशियों का प्रतीक है। हल्दी संरक्षण का प्रतीक है जो होने वाले दूल्हा और दुल्हन को नई राह दिखाने और विवाहित जीवन में स्वागत करने का संकेत देता है। यह स्वास्थ्य वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद है। हल्दी चेहरे पर निखार लाता है और त्वचा को और चमकदार बनाता है।

साक्ष्यों और सूत्रों के मुताबिक हल्दी की रस्म भतवान के दिन में होने वाले वर/वधु के कुँवरपन के बाद शुरू की जाती है जहाँ माताएँ एवं बहने दूल्हे और दुल्हन को हल्दी लगाती हैं। होने वाले दुल्हन और दूल्हे के हाथों में चावल, एक चूड़ी और चावल के ऊपर एक लड्डू रखा जाता है जिसको लेकर सात बार मंडप में जाया जाता है और हर बार चावल बदला जाता है। लड़की को पीली साड़ी पहनाई जाती है और लड़के को

सफेद धोती पहनाकर हल्दी की रस्म निभाई जाती है। भतवान के दिन में कुँवरपन उतरने के बाद तीन हल्दी लगा दी जाती है और बाकी के चार हल्दी भतवान की रात को लगाई जाती है।

- **लावा भूजने की रस्म**

शादी-विवाह में लावा भूजने की रस्म का कारण यह है कि जैसे धान को भूजने पर उसके छिलके अलग नहीं होते वैसे ही पति और पत्नी को भी शादी-शुदा जीवन में आई कठिनाइयों का सामना मिलकर करना चाहिए न कि एक दूसरे का साथ छोड़ दे। यह रस्म भतवान की रात को किया जाता है। रात्री की बेला में हल्दी लगाने की रस्म खत्म कर महिलाएँ लावा भूजती हैं। वर एवं वधु की बहनें और बुआ द्वारा लावा भूजा जाता है। इसी भूजे गए लावा को विवाह में भावर घुमते समय अग्नि में डाला जाता है। बातिनिकामा लम्बासा में हिन्दू विवाह के अंतर्गत लावा भूजने की रस्म बहुत धूम-धाम से की जाती है। तथा इस रस्म को अच्छी तरह करने के लिए परिवारवाले तथा मित्रों द्वारा हँसी-खुशी स्त्रियों को नेग मिलता हैं। इस अवसर पर पूर्वजों द्वारा गाये जाने वाले लोक गीत बैठकी में गये जाते हैं। ज्यादातर स्त्रियाँ इन लोकगीतों को ढोलक, हारमोनियम व घनताल के साथ गाती हैं।

शादी के अवसर पर हर एक रस्म के निभाए जाने पर गीत गा कर महिलाएं अपने हर्ष – उल्लास को प्रदर्शित करती है। यहाँ तिलक से लेकर कन्या विदा होने तक वर-वधू दोंनों के घर पर लोक-गीत गाए जाते हैं।

- **भतवान पर गाए जोनेवाले लोकगीत**

हमारे सांस्कृतिक धरोवर का एक महत्वपूर्ण अंग संगीत है। हमारे पूर्वजों ने न सिर्फ अपने साथ धार्मिक ग्रंथ लाए, अपितु सांस्कृतिक विरासत के रूप में लोकगीत भी लाए। लोकगीत सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हैं। इन लोकगीतों की कोई व्यक्तिगत पहचान नहीं है क्योंकि ये सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक की भावनाओं को अभिव्यक्त करते गीत हैं। बड़े-बुजुर्ग कहा करते थे कि हमारे परआजा-आजी अपनी व्यथा बिरहा गाकर सुनाया करते थे जो उनके दुख-सुख के साथी थे।

शादी में लोकगीत की परंपरा गिरमिट काल से चली आ रही है जिसे लोग अपनी लोकभाषा में गाते हैं। यह बहुत ही मनोरंजक होता है। लोकगीत विवाह को और भी रोचक बना देता है जिसे सुन कर सब झूम उठते है। भतवान की हर एक रस्म पर साज-बाज के साथ मज़ेदार लोकगीत गाई जाती है। हल्दी लगाने का, लावा भूजने का तथा प्रीतिभोज से जुड़ी ऐसे कोई मौके पर लोकगीत गाई जाती है। इसमें मज़ाक भी किया जाता है और सभी मज़ा लेते हैं। जैसे लावा भूजने पर यह लोकगीत काफी प्रचलित है-

“भुजइन मारो न नज़रिया जल्दी लावा भूजों रे,

हो भुजइन मारो ना नज़रिया जल्दी लावा भूजों रे

लावा भूजों रे भुजइन लावा भूजों रे..."

(मिश्र. शिव, 2011)

इस रसमों के चलते सभी मेहमानों के लिए रात के खाने के साथ-साथ पुरुष वर्ग के लिए पारंपरिक फीज़ियन पेय "ग्रोग" रहता है।

बातिनिकामा के लोगों का मानना है कि शादी के रीति-रिवाज में पहले से काफी बदलाव आ गया है। वर्तमान में हिन्दू विवाह में भतवान के सभी रस्मों को आज भी किया जाता है परन्तु पहले से थोड़ा भिन्न है क्योंकि समय के साथ इसमें थोड़ा बदलाव आ गया है। जैसे पहले विवाह संस्कार तीन दिन का रहता था मगर अब सिर्फ दो दिन में पूरा हो जाता है। जहाँ पर तेलवान और भतवान एक ही दिन कर दिया जाता है और अगले दिन विवाह संपन्न हो जाती है। यह भी देखा गया है कि कहीं कहीं पर शादी के मंडप में केले के पेड़ नहीं लगाए जाते हैं तथा पहले से बना हुआ 'रेडि मेड' मंडप लाते है जो कृत्रिम और दिखाऊँ लगता है।

भारतीयों को फीजी आए 144 वर्ष हो चुके हैं। प्रवास में रहते हुए उनका नए लोगों, भाषा और चीजों से सम्पर्क हुआ। समय के चलते उन्होंने अन्य संस्कृतियों से अपने आपको अधिक समृद्ध किया। लेकिन इसके साथ-साथ अपनी संस्कृति में आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच बनाए रखा जिसका प्रमाण उपरोक्त शादी की रस्मों में देखा जा सकता है।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. अरोड़ा, निम्मी. "*शुभ मंगल विवाह",* सागर पब्लिकेशन, भारत।
2. इंदू चंद्रा. 2023. फीजी की लोकगीत परंपरा,प्रवासी संसार. वर्ष 17, अंक 2 , पृ.39-40.
3. वीरेंद्रा, इंदु. 2011. भारतीय संस्कार. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
4. बाल, सामंत. "*हल्दी की विशेषताएं",* परचुरे प्रकाशन मंदिर।
5. मिश्र, शिव. 2011. *"विवाह पध्दति",* रूपेस थाकुर प्रकाशन।
6. नायडू,अमर पंडित. 2021. (साक्षात्कार) *"भतवान की रस्म"*, लम्बासा संगम मंदिर।
7. प्रसाद, राम. 2021. (साक्षात्कार) *"मंत्रि पूजन पर जानकारी"*, बातिनिकामा, लम्बासा।

****